eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

रामायण काल में पर्यावरण संरक्षण – राज्य एवं प्रजा की भूमिका

[1]डा0 कान्ती शर्मा

[1]एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरसागंज, फिरोजाबाद।

Received: 12 Jan 2020, Accepted: 19 Jan 2020, Published on line: 30 Jan 2020

Abstract

प्रस्तुत लेख '' रामायण काल में पर्यावरण संरक्षण –राज्य एवं प्रजा की भूमिका'' में पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति उद्भव एवं महत्व पर प्रकाश डाला गया। लेख में पर्यावरण से सम्बन्धित भारतीय एवं पाश्चात्य विचारधारा का यथा विवेचन किया गया है । तत्पश्चात रामायण काल में राज्य द्वारा संरक्षित उपवन, उद्यान को ससंदर्भित, विश्लेषित किया गया है। अयोध्या नगरी, मिथिला नगरी, लंका तथा किष्किन्धा नगरी के उद्यानों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। लेख में राज्य संरक्षण द्वारा उद्यानों, जलाशयों, राजमार्गों पर प्राकृतिक सौन्दर्य को भी वर्णित किया गया है। रामायण काल में राज्य में समुन्नत पर्यावरण में सामाजिक सहयोग को उद्घृत किया गया है। रामायण काल में वातावरण की शुद्धता व स्वच्छता के लिए यज्ञानुष्ठान का भी यथा विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

रामायणकाल में वातावरण अपने समुन्नत श्रेष्ठतव को पा सका जिसमें राजा व प्रजा दोनों का सहयोग स्पष्ट परिलक्षित होता है। महर्षि वाल्मीकि स्पष्ट किया कि ''बिना प्रकृति संतुलन के कुछ भी संरक्षित नहीं रह सकता क्योंकि इस सम्पूर्ण जगत के अस्तित्व का आधार प्रकृति है। पर्यावरण संरक्षण के अभाव में जीवन शून्य है। अतः लेख में उद्घृत प्रसंगों से स्पष्ट है कि रामायण काल में पर्यावरण समुन्नत था जिसमें राजा व प्रजा का सहयोग व भूमिका समान थी।

प्रस्तावना :– प्रस्तुत लेख 'रामायण काल में पर्यावरण संरक्षण– राज्य एवं प्रजा की भूमिका' में पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ तथा विभिन्न उपसर्गों का प्रयोग, पर्यावरण शब्द की व्युत्पत्ति, पारिस्थितिकी, तथा पर्यावरण की मानवीय जीवन में उपयोगिता को परिलक्षित करता हैं। लेख में पर्यावरण सम्बन्धी पाश्चात्य एवं भारतीय विचारधाराओं की विवेचना प्रस्तुत की गयी है। लेख में रामायण काल में विभिन्न शासकों द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर किए कार्यों तथा राज्य में निवास करने वाली प्रजा के सहयोग को रामायण काल के प्रसंगों सहित उद्घृत किया गया है। लेख की मौलिकता एवं प्रमाणिकता को

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

मौलिक रूप प्रदान करने हेतु तात्कालिक प्रसंगों को यथा विवेचित किया गया है। लेख में राज्य व शासन दोनों की भूमिकाओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

पर्यावरण :– पर्यावरण शब्द संस्कृत की 'वृ'.धातु में 'परि' तथा 'आ' उपसर्ग एवं 'ल्यूट' प्रत्यय जोड़ने से बना है अर्थात् परि + आ + वृ + ल्युट = पर्यावरण। 'परि' का है चारों ओर फेंकना, सब ओर फैलाना, प्रसार करना, फैला देना, घेरना। [1] पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ अंग्रेजी भाषा के Ecology (पर्यावरण) Etimology अर्थात् व्युत्पत्ति (वाड़गमय, मूल प्रयोग आदि) पर दृटि डालें तो अंग्रेजी भाषा में ये ग्रीक शब्द Oikosology से आया है। जिसका अर्थ है Oikas अर्थात् निवास स्थान Ology अर्थात् निरीक्षण– अध्ययन, अनुसंधान कर उसके विषय में जानकारी प्राप्त करना। अतः पूरे शब्द जो Ecology के विश्व प्रसिद्ध शब्द का मूल है, अर्थ है – अपने निवास स्थान का अध्ययन, जहॉ पर हम रहते हैं। ये मौलिक अर्थ है ग्रीक शब्द का जहॉ से अंग्रेजी भाष का शब्द Ecology आया है।[2]

बेवेस्टर शब्दकोश में पर्यावरण की परिभाषा '' वातावरण से आशय उन घेरे रहने वाली परिस्थितियों, प्रभावों और शक्तियों से है जो रासायनिक और सांस्कृतिक दशाओं (जैसे रीति–रिवाज, कानून, भाषा, धर्म एवं आर्थिक राजनैतिक संगठन) के समूह द्वारा व्यक्ति या समुदाय के जीवन को प्रभावित करती है।[3]

विश्वकोश पर्यावरण को परिभाषित करता है ' "Environment in biology the entere range of external influences acting on an organism both the physical and the biological (i.e. other organisms) forces of nature surrounding an individual." [4]

वैदिक ऋषि कामना करता है कि द्युलोक, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधियां, वनस्पतियां आदि सभी परमपवित्र सम्पन्नता प्राप्त होकर शान्ति प्रदान करें–

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः, पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोधयः शान्तिः ।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्वृहम शान्तिः।, सर्वशान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि।[5]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

पर्यावरण की पवित्रता क्षितिज, जल, अग्नि, अन्तरिक्ष, वायु 'पंचतत्वों एवं उनके उपादानों' की पवित्रता पर निर्भर है । इसके लिए मानव के अन्तःकरण चतुष्टय (मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार) निष्काम तथा निर्मल होने पर ही सामाजिक तथा प्राकृतिक –पर्यावरण को पावन रखने में सक्षम होते है। काम या मानव की विकृत इच्छाएं रजोगुणी होती हैं। जो मानव वमन को विकृत कर असन्मार्गोमुखी बनाती है। श्री मद्भगवद्गीता में उल्लेख है –

काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः ।

महाशनो पाप्मा विद्वयेनमिह वैरिणम्।।[6]

मानव का निष्काम भाव उसके मन को तो निश्छल, निर्मल एवं पावन बनाता है साथ ही उसका अमल मन अपने समस्त व्यावहारिक परिसर को अपनी सुदृष्टि एवं सदाचरण तथा सत्कर्म से परमशान्त एवं परम पावन बनाने में सहज सहयोग प्रदान करता है। इसीलिए सामाजिक एवं प्राकृतिक पर्यावरण की पावनता हेतु मानव मन की निर्मलता का विशेष महत्व है।

आयुर्वेद में पर्यावरण का मापदण्ड तुलसी का पौधा माना गया है। उल्लखित है कि '' जिस घर में बार–बार तुलसी का पौधा मर जाये वहां का पर्यावरण प्रदूषित होता है।[7] इसी तथ्य का समर्थन 'चरक संहिता' में महर्षि अग्निवेष द्वारा किया गया है उन्होने स्पष्ट किया कि '' वायु आदि समस्त तत्वों के प्रदूषण की जड़ अधर्म तथा प्रकृति और समाज के नियमों का उल्लंघन है। अधर्म का मूल कारण प्रज्ञापराध और जानबूझकर किए गये गलत कार्य हैं।''[8]

भारतीय अवधारण में पर्यावरण के सभी प्रमुख पक्षों पर पुरातनकाल से ही विचार किया जाता रहा है तथा पर्यावरण के प्रति अपनी चेतना और जागृति को सम्पूर्ण विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। पाश्चात्य अवधारण के समर्थक 'ए गाउडी (A Gouddie 1984) ने अपनी पुस्तक The Nature of the Environment" में पृथ्वी के भौतिक घटकों को ही पर्यावरण का प्रतिनिध माना है।[9] पाश्चात्य अवधारणा में पर्यावरण को सुरक्षित व संरक्षित करने हेतु बाहय दशाओं तथा प्राकृतिक पर्यावरण को ही महत्व देते हुए इसी के विकास हेतु विविध उपाय किये जाते हैं।

पर्यावरण सम्बन्धी भारतीय तथा पाश्चात्य अवधारणाएं अपने–अपने ढंग से पर्यावरण को निरूपित करती हैं। इन दोनों अवधारणााओ में पर्यावरण को स्वच्छ तथा प्रदूषण रहित कैसे रखा जाये, इस पर विचार की व्याख्या की गयी है। दोनों ही अवधारणाओं को उचित कहा जा सकता है। किन्तु फिर भी

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

भारतीय अवधारणा में पर्यावरण को पूर्णरूपेण शुद्ध रखने के लिए सांस्कृतिकता तथा आध्यात्मिकता पर बल दिया गया है। तदनुसार वह समस्त वातावरण के पावनत्व को अवधारित करना उचित मानती है।

समग्र सृष्टि प्रकृति के अन्तर्गत है, उसका क्षेत्र धरती, आकाश, क्षितिज और दिग्–दिगन्त तक है। जलीय जन्तु एवं वनस्पतियां धरती के सभी प्राकृतिक– आयाम एवं सोपान जीव जन्तु, जल–स्रोत, वायुतत्व आदि तथा सभी क्षितिजीय एवं आकशीय प्राकृतिक संसाधन ये सभी कुछ प्रकृति के अन्तर्गत हैं। मानव का शिवत्व भी प्रकृति की ही देन है। मनुष्य द्वारा किए गये यज्ञानुष्ठान व प्रकृति को समुज्ज्वल रखने के समस्त करणीय कार्य जिनसे प्राकृतिक सम्पत्ति संवर्द्धन होता है। ये भी प्रकृति के उत्प्रेरक तत्वों में परिगणित है। खाद्य पदार्थ एवं खाद्यान्न, प्राकृतिक–गैस, प्राकृतिक उर्जा, सौर–उर्जा, सरिता, सरोवरों, समुद्रों आदि की जलनिधि ये समस्त ऐसे तत्व प्रकृति के अंगों के रूप में उल्लेखनीय हैं।

प्रकृति का प्रांगण इतना विशाल है कि षट्पद, चतुष्पद और द्विपद मानव भी इसी प्रकृति के प्रांगण में अठखेलियां करता हुआ अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाता है। इस प्रकार समस्त सृष्टि से सुबंधित एवं विस्तृत प्रकृति का क्षेत्र असीमित है एवं सर्वत्र प्रसृत है।

आज के इस भौतिकवादी विचारधारा सम्पन्न युग में पर्यावरण की समस्या निरंतर विकराल रूस लेती जा रही है जो कि इस सम्पूर्ण सृष्टि के अस्तित्व के लिए एक बड़ा खतरा है। एसी स्थिति जोकि स्वार्थपूर्ण है, हमारी सभ्यता, संस्कृति व सम्पूर्ण पर्यावरण के लिए घातक है इस स्थिति से सामना करने हेतु हमारी सरकारों को जागृत होकर कुछ सार्थक पहल करनी होगी तथा इसके अलावा समाज की जिम्मेदारी बनती है। कि वह भी इस समस्या के उन्मूलन हेतु, अपनी सक्रिय– भूमिका का निर्वहन करें और फिर करने से क्या नही हो सकता, बस, आवश्यकता ही लगन, परिश्रम तथ एकता की भावना की है।

बाल्मीकि रामायण में पर्यावरण संरक्षण हेतु जो उपाय किए गये उन्हें अग्रांकित उल्लखित किया गया है–

रामायण में पर्यावरण संरक्षण तथा उसे सात्विक व अधिकाधिक प्राणी मात्र के लिए हितकारी बनाने के लिए राज्य/शासन द्वारा उपाय किये जाते थे। ये उपाय बाहय तथा आन्तरिक दोनों प्रकार

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

के पर्यावरण को शुद्ध तथा संरक्षित करने वाले थे। राज्य में प्राकृतिक पर्यावरण संतुलित रहे इसके लिए रामायण में राज्य शासन के द्वारा प्रयास किए जाते थे। महर्षि वाल्मीकि का मानना था कि '' बिना प्रकृति संतुलन के कुछ भी संरक्षित नहीं रह सकता क्योंकि इस सम्पूर्ण जगत के अस्तित्व का आधार प्रकृति है।[10] सम्पूर्ण भारत में शिलाओं और लौह स्तम्भों पर जो लेख अंकित हैं वे हमें स्मरण दिलाते हैं। सम्राट अशोक की जिन्होंने 22 वीं शताब्दी पूर्व कहा था कि राज्य का कर्तव्य न केवल नागरिकों की रक्षा करना तथा अपराधियों को दण्डित करना है बल्कि प्राणियों के जीवन तथा वनों की रक्षा करना भी है।[11]

रामायण काल के राज्यों में नगरों व राजमार्गों पर वृक्षावलियों के समृद्ध प्रमाण मिलते हैं भरत ने चित्रकूट जाने के लिए गंगातट तक राजमार्ग का निर्माण कराया उसके किनारों पर फूलों से युक्त वृक्ष भी लगवाये।[12] अयोध्यापुरी के वर्णन में अनेकों बार उद्यानों तथा बगीचों का उल्लेख किया गया है वह पुरी पवित्र उद्यानों से अलंकृत थी।[13] सम्भवतः यह उद्यान राज्य द्वारा संरक्षित तथा सार्वजनिक उपयोग के लिए स्थापित किये गये होंगे। उज्जिहानगरी में स्थित उद्यान कदम्ब के वृक्षों की बहुतायत वाला था।[14] जिन्हें राजकीय संरक्षण प्राप्त था। मिथिला राज्य का वर्णन करते समय वहॉ स्थित उपवन का उल्लेख किया गया है।[15] रामायण काल में लंकापुरी भी वन उपवनों से परिपूर्ण थी वहां के उद्यान चौरस, शान्त, सुन्दर, विशाल तथा विस्तृत थे।[16] लंकापुरी को उपवनों तथा उद्यानों की सौन्दर्य सज्जा ने वहां के वातावरण को सुरम्य बनाया था।

किष्किन्धा नगरी के वन –उपवन पुष्पों से सुशोभित थे।[17] इसके उदाहरण रामायण से प्राप्त होते हैं इनमें अयोध्या स्थिव अशोक वनिका, किष्किन्धा स्थित मधुवन तथा लंका स्थित अशोक वाटिका आदि प्रमुख हैं। अयोध्या पुरी में अशोक वनिका को चंदन, अगरू, आम, तुंग, कालेयक, देवदारू, चम्पा, अशोक, पुन्नाग, कटहल, महुआ, असन, परिजात, लोध्र, कदम्ब, अर्जुन, नागकेशर, छितवन, अतिमुक्तक, मंदार, कदली, प्रियंगु, धूलि कदम्ब, वकुल, जामुन, अनार, कोविदार, इतिया के वृक्षों का वर्णन है।[18] नीलम के समान रंगवाली घास उस वाटिका का श्रंगार कर रही थी। सुग्रीव द्वारा संरक्षित मधुवन सैकड़ों वृक्षों से भरा हुआ था।[19] यह राज परिवार का व्यक्तिगत उद्यान था, इसीलिए वानरों ने युवराज अंगद से मधुवन के वृक्षों पर लगे हुए मधु को पीने हेतु आज्ञा प्रदान की थी।[20]

अशोक वाटिका का वर्णन कवि ने अनेकों स्थान पर किया है। जहां विभिन्न प्रजातियों के स्वर्ण व चॉदी वर्ण के वृक्षों को साथ शीतल जल भरे कृत्रिम जलाशय का वर्णन भी रामायण में उपलब्ध

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

है।[21] खुले मैदान पहाड़ी झरने व सुवर्णमय वृक्षों को देखकर रामायण में अशोक वाटिका से सुन्दर उपवन का वर्णन अन्यत्र प्राप्त नहीं होता। प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा तथा प्रबंधन राजा का कर्तव्य था। महिष्मतीपुरी के अन्तर्गत ही नर्मदा नदी बहती थी वह नदी निर्मल जलयुक्त थी।

वातावरण शुद्ध तथा प्रदूषण रहित वायु से परिपूर्ण हो इसके लिए भी राज्य शासन अथवा राजाओं द्वारा उपाय किये जाते थे। रामायण में दैनिक नित्य क्रियाओं में प्रातः हवन, अग्निहोत्र इत्यादि कर्म अनिवार्य थे।[22] रामायण में राजाओं द्वारा कराये गये यज्ञों में राजा दशरथकृत अश्वमेघ यज्ञ[23] त्रिशंकु[24] अम्बरीष[25] बलि[26] श्रीराम[27] द्वारा कराये गये यज्ञों की गणना रामायण में उपलब्ध है। वायुमण्डल में हानिकारक गैसों को अवशोषित करने हेतु विविध वन उपवन होते थे।

रामायण में सर्वत्र प्राकृतिक नियमों का पालन किया जाता था जिसके कारण राम के राज्य मे अकाल मृत्यु, सर्प आदि जन्तुओं

का भय अथवा रोगों की आशंका नहीं थी।[28] रामायण में प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण व संवर्धन हेतु यथोचित प्रयास तथा उपाय किए जाते थे जो तत्कालीन वातावरण को विशुद्ध तथा सुखद बनाने हेतु आवश्यक थे।

किसी भी राष्ट्र की सुख –समृद्धि तथा उत्थान में वहॉ के जनसमुदाय का योगदान सर्वाधिक महत्व रखता है। रामायण कालीन भारत में भी पर्यावरण को संरक्षित करने हेतु राज्य/शासन तथा समाज द्वारा किए गये कार्य परस्पर सहयोग से संचालित थे। तत्कालीन प्राकृतिक, नैतिक, सांस्कृतिक वातावरण के समुन्नयन को देखते हुए अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। कि बिना प्रजा सहयोग के सम्भव न था। रामायण कालीन भारत में पर्यावरण को राजकीय संरक्षण होने के साथ सामाजिक संरक्षण भी प्राप्त था।

पर्यावरण संरक्षण के लिए रामायण में सामाजिक तथा राजकीय दोनों उपायों पर बल दिया गया है। राजकीय उपायों के माध्यम से पर्यावरण का नियम बनाकर राजाज्ञा जारी कर दी जाती थी, जिसका प्रजा को पालन करना अनिवार्य शर्त था। देश के प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा हेतु राज्य शासन द्वारा अनेकानेक उद्यान, वन, उपवन, तथा वाटिकाओं को संरक्षित किया जाता था। जल संरक्षण की शुद्धता /स्वच्छता पर ध्यान देते हुए वायुमण्डल शुद्धि एवं पवित्रता हेतु मंत्रोच्चारण एवं यज्ञानुष्ठान कराये जाते थे। जिसमें प्रयुक्त धूम्र पर मंत्रों की पवित्र ध्वनियों से वायुमण्डल पवित्र हो जाता था।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

रामायण कालीन उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट है कि पर्यावरण संरक्षण राजकीय नीति होने के बावजूद उसका कार्यान्वयन जन सहयोग द्वारा किया जाता था । राजा तथा प्रजा के सहयोग से रामायण काल में वातावरण अपने श्रेष्ठत्व को प्राप्त कर सका।

सन्दर्भ :–

1. *संस्कृत– हिन्दी शब्दकोश– वामन–शिवराम आप्टे, पृ– 580 ।*
2. *मानवीय पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन स्टाकहोम – 14जून 1972।*
3. *बेवेस्टर शब्दकोश –उद्घृत– भारत का आर्थिक एवं वाणिज्य भूगोल– के.जी. जौहरी।*
4. *The New Encyclopedia Britannica (Micropedia Vol. III)*
5. *यजुर्वेद संहिता 36/17 ।*
6. *गीता 3–37 ।*
7. *डा0 एम0एम0 अवस्थी, डा0 आ0पी0 तिवारी पर्यावरण भूगोल– पृ – 268–280तक ।*
8. *वही ।*
9. *उद्घृत – सविन्द्र सिंह – पर्यावरण भूगोल, पृ– 20 ।*
10. *सांख्यिकीय –3 ।*
11. *वाल्मीकि रामायण 3/60 से 64 सर्ग ।*
12. *वाल्मीकि रामायण 1/5/7 ।*
13. *वाल्मीकि रामायण 2/80/13,14 ।*
14. *वाल्मीकि रामायण 2/71/12 ।*
15. *वाल्मीकि रामायण 1/48/11 ।*
16. *वाल्मीकि रामायण 6/39/9–11 ।*
17. *वाल्मीकि रामायण 4/33/4 ।*
18. *वाल्मीकि रामायण 7/42/2–5,9,12 –'14 ।*
19. *वाल्मीकि रामायण 5/61/9 ।*
20. *वाल्मीकि रामायण 5/61/13, 5/64/7, 8 ।*
21. *वाल्मीकि रामायण 5/14/33 ।*

22. वाल्मीकि रामायण 1/6/12 , 2/32/2 ।

23. वाल्मीकि रामायण 1/14/3 ।

24. वाल्मीकि रामायण 1/60/8 ,9 ।

25. वाल्मीकि रामायण 1/62/26 ।

26. वाल्मीकि रामायण 1/29/7 ।

27. वाल्मीकि रामायण 7/92/9 ,6/128/97 ।

28. वाल्मीकि रामायण 6/128/98, 99/7/41/18,19 ।